दिव्यांग बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन

डॉ. गिरिजा रौतेला'

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध दिव्यांग बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन पर आधारित है अध्ययन के उद्देश्य 1 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित शिक्षक केन्द्रित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन करना। 2 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित अधिगमकर्ता सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना। 3 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित समूह सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कुमाऊँ मण्डल के मंगलदीप संस्थान तथा सृजन स्पैस्टिक संस्थान का सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। प्रदत्त संकलन सूचना प्रपत्र, साक्षात्कार अनुसूची तथा अवलोकन अनुसूची द्वारा किया गया। विषयवस्तु विश्लेषण के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। निष्कर्षत पाया गया कि संस्थानों में शिक्षक केन्द्रित क्रियाओं में अधिक निवेशों का प्रयोग होता है। अधिगमकर्ता सहभागिता से संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक तीनों पक्षों में क्रियाऐं कराई जाती हैं। समूह सहभागी गतिविधियों का क्रियान्वयन मुख्यतः मानसिक विकलांग व बहु विकलांग बच्चों के लिए अधिक किये जाते है। संस्थानों में गतिविधियों के क्रियान्वयन में विविधता पाई गई जो कि बच्चों की विकलांगता के आधार पर सार्थक है चूंकि विकलांग बच्चों की गतिविधियों का क्रियान्वयन उसकी विकलांगता को ध्यान में रखकर कराया जाता है जो कि विकलांग बच्चों हेतु पर्याप्त है।

प्रस्तावना

बालक, शिक्षा प्रक्रिया का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है। शैक्षिक प्रक्रिया में कुछ विद्यार्थी ऐसे होते है जो सामान्य बालकों से भिन्न होते है जैसे– प्रतिभावान, पिछड़े और शारीरिक विकलांग बालक। ये बालक अपनी आयु के अन्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, तथा संवेगात्मक गुणों की दृष्टि से भिन्न होते हैं। इन विशिष्ट बालकों का विकास अलग–अलग ढ़ंग से होता है, यथा– प्रतिभावान बालकों का विकास अधिक तीव्रता

से होता है एवं पिछड़े बालकों का विकास अपेक्षाकृत मंद गति से होता है। ऐसे विशिष्ट बालकों की शिक्षा व्यवस्था सामान्य बालकों की तुलना में विशेष सावधानी पूर्वक करनी पड़ती है।

विशिष्ट बालकों में दिव्यांग बालकों की शिक्षा अत्यधिक महत्व रखती है, सामान्यतः किसी भी क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य करने हेतु एक विशिष्ट स्तर की परिपक्वता की आवश्यकता होती है, एक दिव्यांग बालक का व्यक्तित्व अनोखा होता है, उसका यह अनोखापन एक या अनेक दिशाओं में हो सकता है,

जैसे दृष्टि, श्रवण, गति, सम्प्रेषण, बुद्धि और सामाजिक–संवेग इत्यादि इसलिए दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, वाकदोष, मानसिक मंदित, सांवेगिक अस्थिर बालक दिव्यांग बालक कहे जाते हैं।

प्रत्येक बालक की कुछ आधारभूत आवश्यकताएं होती है, दिव्यांग बालकों की आवश्यकताएं एवं समस्याएं उनकी दिव्यांगता के प्रकार, श्रेणी व तीव्रता पर निर्भर करती है किन्तु दिव्यांग बालकों की मानवीय आधार पर कुछ नितान्त आवश्यकताओं की पूर्ति होना उनके विकास के लिए आवश्यक होती है जैसे– आवश्यकता आधारित शिक्षा, स्वयं कार्य करने की क्षमता का विकास और समाज में वैयक्तिक सम्मान की प्राप्ति। शिक्षा समस्त बालकों का मूल अधिकार है अतः दिव्यांग बालक भी निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा की प्राप्ति का समान अधिकार रखते हैं। दिव्यांग बालकों की शिक्षा हेतु सरकार व गैर सरकारी संगठन विविध प्रकार से कार्य कर रहे हैं। सरकारी प्रयासों में सर्व शिक्षा अभियान की समन्वित शिक्षा द्वारा दिव्यांग बालकों के शैक्षिक विकास हेतु अनेक प्रमुख प्रयासों को स्वीकारा गया है वर्तमान में सरकार ही नहीं वरन् अनेक गैर सरकारी संगठन भी दिव्यांग बालकों के शैक्षिक विकास हेतु प्रतिबद्ध हैं। ये गैर सरकारी संगठन विभिन्न राज्यों में विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्यरत हैं।कुमाऊँ मण्डल के अन्तर्गत मंगलदीप संस्थान एवं सृजन स्पैस्टिक संस्थान ऐसे दो गैर सरकारी संगठन है जो कि विविध विकलांग बालकों के विकास हेतु कार्य कर रहे हैं। अतः इन गैर सरकारी संगठनों के शैक्षिक प्रयासों के सम्बन्ध में अनुसंधात्री के समक्ष अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए।यथा– गैर सरकारी संगठन दिव्यांग बालकों के संज्ञानात्मक विकास हेतु किस प्रकार की क्रियाएँ नियोजित करते है ? दिव्यांग बालकों के भावात्मक पक्ष में विकास के लिए इनके कार्यक्रम क्या है? मनोगत्यात्मक पक्ष के विकास के लिए गैर सरकारी संगठन किन विशिष्ट कार्यक्रमों को संचालित कर रहे है? क्या कार्यक्रमों को किसी विशेषज्ञ की सलाह से संगठित किया जाता है?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर जानने हेतु अनुसंधात्री ने अग्रांकित समस्या का चयन शोध अध्ययन हेतु किया **दिव्यांग बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन**

अध्ययन के उद्देश्य

1. दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित शिक्षक केन्द्रित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
2. दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित अधिगमकर्ता सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

3. दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित समूह सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

शोध विधि प्रस्तुत शोध में प्राथमिक प्रदत्तों की प्राप्ति सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया।

प्रदत्तों के स्रोत

1. गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रकाशित पैम्पलेट, कार्यालयी अभिलेख, वार्षिक रिर्पोट एवं अन्य प्रकाशित सामग्री।
2. संगठनों के निर्देशक या अध्यक्ष।
3. संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकगण।
4. संगठनों द्वारा संचालित क्रियाओं (गतिविधियों) एवं वास्तविक क्षेत्र–परिस्थितियाँ ।
5. संस्थाओं में अध्ययनरत दिव्यांग बालकों के अभिभावक।

न्यादर्श प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कुमाऊँ मण्डल के मंगलदीप संस्थान तथा सृजन स्पैस्टिक संस्थान का सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक है इसमें दिव्यांग बालकों के विकास हेतु गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु अग्रलिखित उपकरणों का निर्धारण, निर्माण एवं प्रयोग कर प्रदत्त संकलित किये गये –

1. सूचना प्रपत्र
2. साक्षात्कार अनुसूची
3. अवलोकन अनुसूची

प्रदत्त विश्लेषण की प्रक्रिया

विविध प्रकार के उपकरणों की सहायता से वर्णनात्मक प्रदत्तों का विश्लेषण अनेक पदों में किया गया और शोध उद्देश्य के अनुसार उन्हें व्यवस्थित किया गया। वर्णात्मक प्रदत्तों के *विषयवस्तु विश्लेषण* के माध्यम से विश्लेषित किया गया

निष्कर्ष एवं विवेचना

उद्देश्य 1 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित शिक्षक केन्द्रित गतिविधियों के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

शिक्षक केन्द्रित निवेशों के क्रियान्वयन में समस्त गतिविधियों का केन्द्र शिक्षक होता है, शिक्षक भिन्न–भिन्न अनुभवों से अनेक प्रकार की गतिविधियों का न केवल नियोजन एवं क्रियान्वयन होता है वरन् अन्तर्भावितता भी प्रदर्शित करता है, शिक्षक सरल से कठिन की ओर के माध्यम से छात्रों को शिक्षण प्रदान करता है। तथा पूर्व ज्ञात सम्प्रत्ययों का अधिकाधिक प्रयोग करके नवीन सम्प्रत्ययों के प्रति अवबोध विकसित करने का प्रयास करते हैं।

शिक्षक बड़े अक्षरों, पहेली क्रियाओं, कहानी, खेल व कथन/व्याख्या एवं उदाहरण के माध्यम से बच्चों को पढ़ाते हैं अलग–अलग सम्प्रत्ययों को पढ़ाने हेतु शिक्षक अनेक सहायक सामग्रियों का प्रयोग करता है, जिनमें चार्ट, मॉडल, मूर्त वस्तु/वास्तविक वस्तु, फ्लैश कार्ड, मानचित्र, श्यामपट्ट जैसे दृश्य सहायक सामग्री व रेडियो, टेपरिकार्डर, मोबाइल जैसे श्रव्य सहायक सामग्री व कम्प्यूटर फिल्म, दृश्य श्रृव्य सहायक सामग्री का प्रयोग करता है जिससे बच्चों का संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक तीनों पक्षों का विकास होता है।

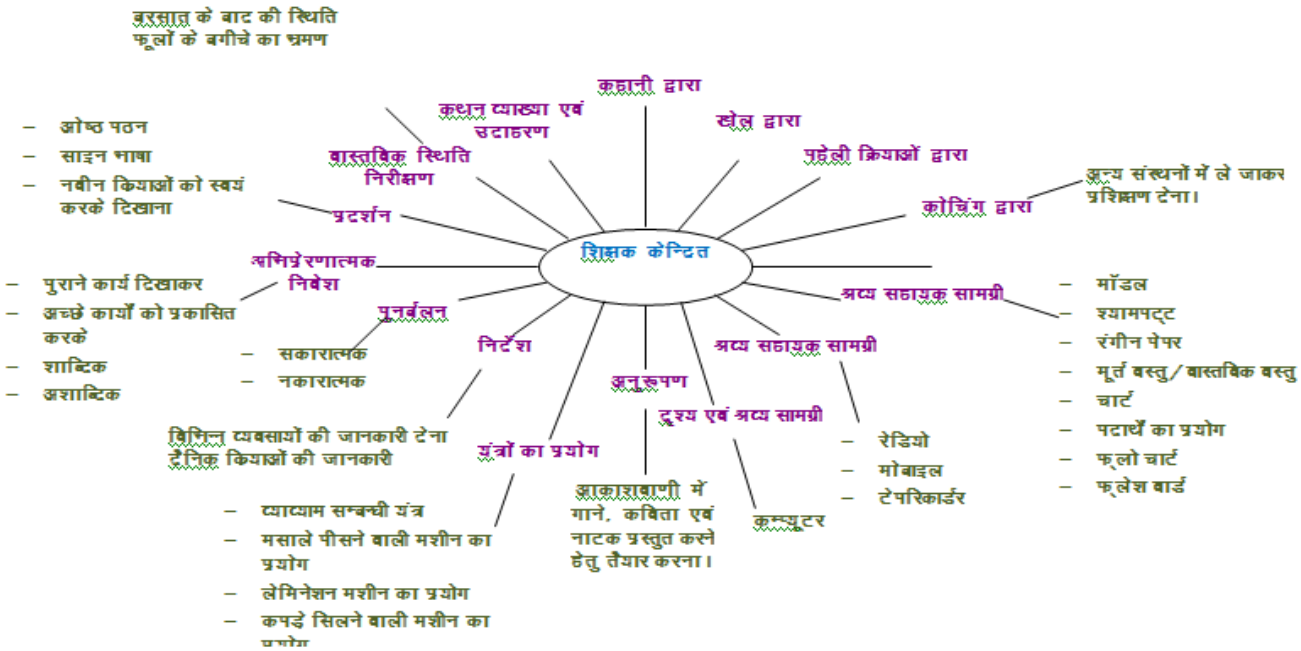

चित्र –1 संस्थानों में शिक्षक–केन्द्रित अनुभवों का क्रियान्वयन

शिक्षक द्वारा बच्चों को निर्देश देना, यंत्रों का प्रयोग व अनुरूपण जैसे निवेशों के प्रयोग, बच्चों के निम्न गतिविधियाँ कराते हैं जैसे–आकाशवाणी में बच्चों की कविताऐं, गाने, नाटक इत्यादि को प्रसारित करने हेतु तैयारी करवाते हैं, अभिप्रेरणात्मक निवेशों के माध्यम जैसे अच्छे कार्यों की प्रकाशित करना पुराने कार्य दिखाकर, शाब्दिक व अशाब्दिक द्वारा ना केवल भावात्मक विकास करते हैं वरन् बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में भी वृद्धि होती है शिक्षक बच्चों को नये–नये स्थानों में ले जाकर वास्तविक स्थिति निरीक्षण कराते हैं।

बच्चों में कौशल विकास (मनोगत्यात्मक पक्ष) हेतु अन्य संस्थानों में ले जाकर प्रशिक्षण देते हैं नये पाठ को पढाने हेतु व्याख्यान के साथ–साथ प्रदर्शन का प्रयोग भी करते हैं। इस प्रकार शिक्षक इन निवेशों के माध्यम से बालकों का न केवल संज्ञानात्मक विकास कराते हैं अपितु भावात्मक व मनोगत्यात्मक विकास भी कराते हैं।

संज्ञानात्मक विकास के लिए शिक्षक केन्द्रित निवेश अधिक उपयोगी एवं उपयुक्त दृष्टिगत होते हैं। शिक्षक शिक्षण के अलावा प्रशिक्षण भी देते हैं। जिससे कि बच्चों में दैनिक कार्य सम्बन्धी कौशलों की जानकारी व नई–नई आदतों के विकास हेतु अनेक जानकारी देते हैं जिससे कि बच्चों में मनोगत्यात्मक विकास होता है। शिक्षक केन्द्रित क्रियाऐं जैसे– निर्देश, यंत्रों का प्रयोग (व्यायाम सम्बन्धी, मसाले पीसने वाली मशीन, लेमिनेशन मशीन, कपड़े सिलने वाली मशीन) के अनुरूपण इत्यादि क्रियान्वयन मानसिक विकलांग बालकों के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं।

कथन, व्याख्या एवं उदाहरण कहानी द्वारा खेल द्वारा व पहेली क्रियाओं द्वारा, शिक्षण मन्द बुद्धि बालकों के शैक्षिक विकास में अधिक सहायक होती है। प्रदर्शन जैसे– ओष्ठ पठन, साइन भाषा, बड़े अक्षरों द्वारा, दृश्य श्रव्य सामग्री के प्रयोग द्वारा गतिविधियां कराना श्रवण बधिर बच्चों के लिए अनुकूल होती है। अनुरूपण (आकाशवाणी में गाने, कविता एवं नाटक प्रस्तुत करने हेतु तैयार कराना) अभिप्रेरणात्मक निवेश (अच्छे कार्यों को प्रकाशित कराना, पुराने कार्य दिखाना), पुनवर्लन, इत्यादि शिक्षक केन्द्रित क्रियान्वयन समस्त दिव्यांग बालकों के भावात्मक विकास हेतु उपयुक्त होता है।

उद्देश्य 2 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित अधिगमकर्ता सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

अधिगमकर्ता सहभागी अनुभवों में बालक की प्रमुख भूमिका होती है, शिक्षक बालकों को निर्देश देता है किन्तु बालक व्यक्तिशः उस कार्य को स्वयं करता है जैसे–योगा, हाथ–धोना, स्वयं खाना खाना, स्वयं की बोतल से पानी पीना, नाक साफ करना, जोड़–घटाना सीखना, कूड़े को कूड़ेदान में डालना, घर व विद्यालय के फोन नम्बर याद करना तथा दोहे की पुनरावृत्ति कराई जाती है। जिससे कि बच्चों का

संज्ञानात्मक के साथ–साथ मनोगत्यात्मक विकास को भी बल प्राप्त होता है। दिव्यांग बालक विशिष्ट कौशल अभ्यास के माध्यम से अनेक प्रकार के व्यावसायिक कौशल सीखता है जैसे– कालीन बनाना, वादन यंत्र बजाना, सिलाई, कपड़ों का आसन बनाना, अनुप्रयोगी सामान से सजावट की चीजें बनाना व नृत्य प्रशिक्षण इत्यादि सीखते हैं जिससे कि बालकों का व्यावसायिक कौशल विकसित होता है, जो कि मनोगत्यात्मक पक्ष का भाग है।

बालक अनुकरण के माध्यम से कई सम्प्रत्ययों व नैतिक शब्दों को सीखता है जैसे– प्रार्थना दोहराना, अध्यापक द्वारा बताये गये नैतिक शब्दों का उच्चारण करता है, स्वअभिव्यक्ति के माध्यम से बालक के अन्दर के संवेगों को चित्रकला व अन्य माध्यमों से बाहर निकालने की कोशिश की जाती है, इससे बच्चों में भावात्मक विकास होता है।

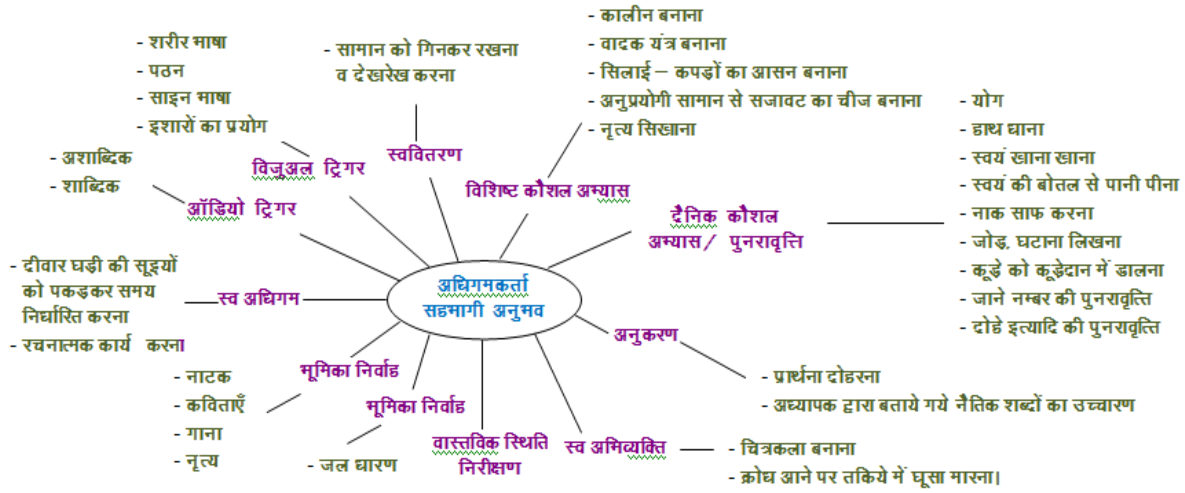

चित्र –2 संस्थानों में अधिगमकर्ता सहभागी अनुभवों का क्रियान्वयन

प्रायोगिक कार्य जैसे– हाथ में जल धारण करने का कौशल विकसित किया जाता है, भूमिका निर्वाह, स्व–अधिगम स्ववितरण जैसी क्रियाओं से बच्चों में संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक विकास किया जाता है।

बच्चों को ऑडियो ट्रिगर व वीडियो ट्रिगर के माध्यम से सांकेतिक विकास कराया जाता है। विजुअल ट्रिगर (शरीर भाषा, ओष्ठ पठन, साइन भाषा, इशारों का प्रयोग) श्रवण बाधित बालकों के विकास हेतु प्रयुक्त किया जाता है जबकि ऑडियो ट्रिगर (शाब्दिक, अशाब्दिक) दृष्टि बाधित बच्चों के विकास हेतु उपयोग में लाया जाता है।

दैनिक अभ्यास कौशल (योगा, हाथ धोना, स्वयं खाना खाना, स्वयं की बोतल से पानी पीना, नाक साफ करना, जोड़, घटाना, सिखाना, कूड़े को कूड़ेदान में डालना, फोन नंबर की पुनरावृत्ति, दोहे इत्यादि की पुनरावृत्ति), अनुकरण (प्रार्थना दोहराना, अध्यापक द्वारा बताये गये नैतिक शब्दों का उच्चारण) मानसिक विकलांग बालकों के विकास में प्रयोग किया जाता है।

स्वअधिगम (दीवार घड़ी की सुईयों को पकड़कर समय निर्धारित करना, रचनात्मक कार्य करना) भूमिका निर्वाह (नाटक, कविताऐं, गाना, नृत्य), स्ववितरण व विशिष्ट कौशल अभ्यास (कालीन बनाना, वादन यंत्र बजाना, सिलाई, कपड़ों का आसन बनाना, अनुप्रयोगी सामान से सजावट की चीज बनाना, नृत्य सिखाना) इत्यादि क्रियान्वयन मन्द बुद्धि व बहुविकलांग बच्चों के विकास में अनुप्रयोग किया जाता है।

विभिन्न प्रायोगिक कार्य (जमत ीवसकपदह), स्व अभिव्यक्ति (चित्रकला बनाना, क्रोध आने पर तकिये मे घूसा मारना) स्वअधिगम (माण्टसेरी ब्लाक द्वारा, पहेली क्रियाओं द्वारा) इत्यादि अधिगमकर्ता सहभागी अनुभव ऑटिस्टिक बच्चों के विकास हेतु क्रियान्वित किया जाता है।

उद्देश्य 3 दिव्यांग बालकों के विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों द्वारा आयोजित समूह सहभागी अनुभव के क्रियान्वयन का अध्ययन करना।

समूह सहभागी में अनुभव सामूहिक रूप में कराई जाती है, शिक्षक बच्चों को निर्देशित करते हैं तथा बच्चे एक–दूसरे के सहयोग से लघु समूह या वृहद समूह में कार्य करते हैं, सामूहिक विशिष्ट कौशल विकास में बालक कई प्रकार की क्रियाऐं करते हैं जैसे –लिफाफे बनाना, हर्बल होली के रंग बनाना, बुक मार्क बनाना, कपडे व रूई की बाती बनाना, शगुन के लिफाफे बनाना, स्पाईरल व लेमिनेशन करना, दलिया बनाना एवं मोमबत्ती बनाना, जिससे कि बच्चों का मनोगत्यात्मक विकास होता है। इसके साथ बच्चों में सामाजिक व्यवहार जैसे सहयोग, सामंजस्य, सम्मान, सहानुभूति इत्यादि गुणों का विकास होता है। चूंकि सामूहिक रूप में कार्य करने पर बच्चे को संवेगों की अभिव्यक्ति का अवसर भी प्राप्त होता है। इस प्रकार सामूहिक सहभागिता से बच्चो को संवेगों की अभिव्यक्ति का अवसर भी प्राप्त होता है। इस प्रकार सामूहिक सहभागिता से बच्चे का संवेगात्मक विकास भी होता है।

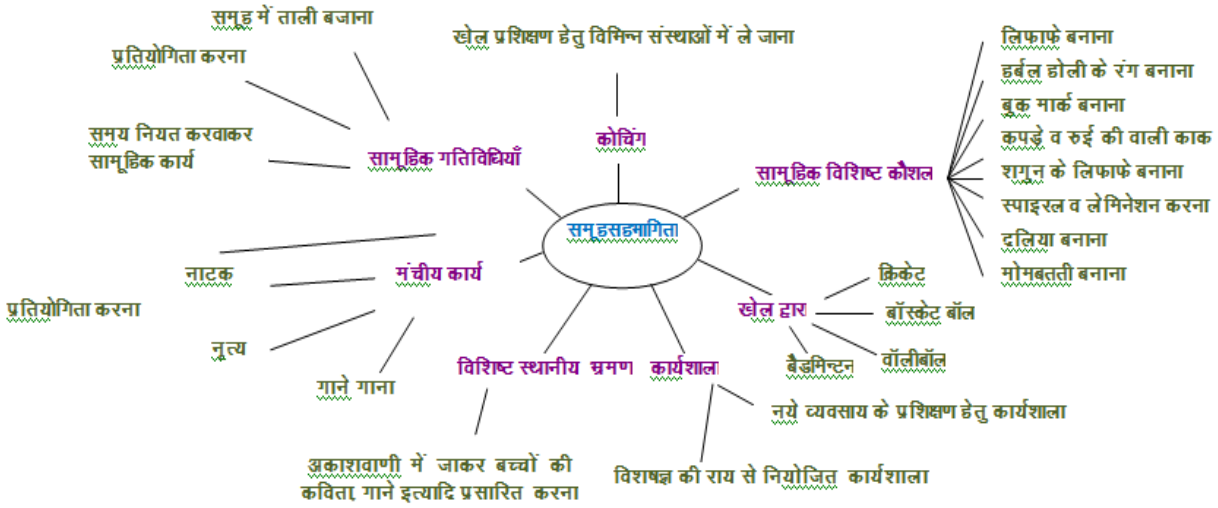

चित्र – 4 संस्थानों में समूह सहभागी अनुभवों का क्रियान्वयन

क्रिकेट, बॉलीबॉल, बैडमिंटन आदि खेलों से बच्चों में सामाजिक विकास होता है संस्थान में कार्यशालाऐं कराई जाती हैं, जिसमें नये व्यवसाय हेतु प्रशिक्षण, विशेषज्ञ की राय से नियोजित कार्यशाला कराई जाती है। जिससे कि बच्चों का संज्ञानात्मक व मनोगत्यात्मक विकास को बल प्राप्त होता है।विशिष्ट स्थानीय भ्रमण जैसे आकाशवाणी में ले जाकर बच्चों द्वारा कविताऐं, गाने इत्यादि प्रसारित कराया जाता है जिससे कि बच्चों का भावात्मक विकास होता है बच्चों को विभिन्न मंचों पर जैसे– नाटक, नृत्य एवं गाना गाने के माध्यम से समायोजन, मूल्य, रूचि, प्रशंसा भाव, भावाभिव्यक्ति जैसे भावात्मक गुणों का विकास कराया जाता है। सामूहिक गतिविधियों जैसे समूह में ताली बजाना, प्रतियोगिता कराना, समय नियत करवाकर कार्य कराने से तथा विभिन्न संस्थानों में खेल प्रशिक्षण हेतु ले जाने से बच्चों के भावात्मक व मनोगत्यात्मक विकास में सहायक होती है।

सामूहिक विशिष्ट कौशल (लिफाफे बनाना, हर्बल होली के रंग बनाना, बुक मार्क बनाना, कपडे व रूई की बाती बनाना, शगुन के लिफाफे बनाना, स्पाईरल व लेमिनेशन करना, दलिया बनाना एवं मोमबत्ती बनाना) मंचीय कार्य (नाटक, नृत्य, गाने) इत्यादि क्रियान्वयन मुख्यतः मानसिक विकलांग बच्चों हेतु आयोजित की जाती है कई बार अन्य विशिष्ट बालकों को भी इस प्रकार क्रियान्वयन कराए जाते हैं।

कार्यशालाऐं (विशेषज्ञ की राय से नियोजित नये व्यवसाय के प्रशिक्षण हेतु) कोचिंग व खेल द्वारा (क्रिकेट, बॉलीबाल, बैडमिंटन) इत्यादि मानसिक विकलांग हेतु नियोजित किये जाते हैं। सामूहिक गतिविधियाँ (समय नियत करवाकर, सामूहिक कार्य कराना, प्रतियोगिता, समूह में ताली बजाना) कम उम्र के विशिष्ट बालक हेतु कराया जाता है। विशिष्ट स्थानीय भ्रमण (आकाशवाणी में ले जाकर बच्चों को कविता, गाने इत्यादि प्रसारित करना) मानसिक विकलांग बच्चों के विकास हेतु प्रयुक्त किया जाता है।

समेकन

इस प्रकार निष्कर्षतः कह सकते हैं कि शिक्षण व प्रशिक्षण के अतिरिक्त शिक्षक बच्चों को निर्देशन भी देते हैं। बच्चों की समस्याओं को समझना व उनके समाधान हेतु भी क्रियाऐं कराई जाती हैं। जिससे कि बच्चे का भावात्मक विकास कराया जाता है। इस प्रकार बालक कई प्रकार के अनुभवों के माध्यम से सीखता है। जिसमें अध्यापक बालक को निर्देशित करता है बालक इन क्रियाओं को रूचिपूर्ण तरीके से करता है जिससे कि बालक का संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक विकास कराया जाता है, अधिगमकर्ता सहभागिता से संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगत्यात्मक तीनों पक्षों में क्रियाऐं कराई जाती हैं। समूह सहभागी अनुभव मुख्यतः मानसिक विकलांग व बहु विकलांग बच्चों के लिए अधिक किये जाते है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **चन्द्र, स्नेहलता. (2007).** *''नॉन गॅवरमैंट ऑर्गनाइजेशन : स्ट्रक्चर रेविलैंस फैंगसन'.* नई दिल्ली : कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- **धवन, एम. एल. (2005).** *''एज्यूकेशन ऑफ चिल्ड्रैन विथ स्पैशल नीड्स''.* दिल्ली : ईशा बुक्स.
- **नन्दिनी, दुर्गेश., एवं गुप्ता, पूर्णिमा. (2004).** *''विकलांग बालकों के विकास का प्रबल माध्यम–समावेशी शिक्षा''.* वर्ष 30 (1). पेज नं. 18–20
- **पटनायक, एस.एन. (2010).** *''स्पेशल एज्यूकेशन पॉलीसॉज. प्रैक्टिसिस एण्ड सोशल इश्यू''.* नई दिल्ली : मुरारी एण्ड सन्स.
- **पाठक, आर.पी. (2011).** *''उच्च शिक्षा मनोविज्ञान''.* दिल्ली : पीयरसन.
- **पाण्डेय, के.पी. (2005).** *''फण्डामेन्टल्स ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च''.* वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- **पाण्डे, मंजु. (2000).** *''द लर्निंग डिसेबिलीटी एण्ड फ्रसटेशन टौलरैन्स लेबल''.* डिसैबिलीटी एण्ड इम्पैयर्डमैन्टल. वॉल्यूम 14 (1). पृ. 9–14.
- **पुरोहित, अणिमा. (2008).** *''गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित अनाथालयों द्वारा बालकों के शैक्षिक विकास के प्रयास : एक अध्ययन''.* शोध प्रबन्ध. वनस्थली विद्यापीठ : शिक्षा विभाग.